तर्ज --हाल क्या है दिलो का
ऐ मेरे मेहरबां अपने घर अब तो चल
इस जमीं पर अब अपना गुजारा नही
हर घड़ी का मिलन तो मिलन है पिया
चार दिन का मिलन ये हमारा नही
1--ये मेले भडांरे तो होते रहे,
हम बिछुड़ते रहे और रोते रहे
अब तो सहने की हिम्मत खत्म हो चुकी,
ये नजारा पिया कुछ नजारा नही
2--मुद्धतो से बिछड़ कर मिले है अभी,
फिर न जाने मिलन हो कहां और कभी
प्यार से यूं गले से लगा कर पिया,
ये सहारा पिया,वो सहारा नही
3--भूल हमरी हमारी खता बख्श दो,
ले चलो फिर जो चाहे सजा सख्त दो
यूं बिछड़ के तो चलना भले ठीक था,
पर यूं मिलकर बिछुड़ना गंवारा नही

Nijanand App